Page No.
Date / /

(1)

B.A. (Hons) Part II
Philosophy - Paper IV
Topic - Cogito - Ergo - Sum.

Dr. Sachidanand Prasad.
Dept. of Philosophy.
R.R.S. College, Mokama.

देकार्त के द्वारा स्थापित प्रसिद्ध Cogito - ergo - sum एक सिद्धान्त है, क्योंकि इसी सिद्धान्त पर उनका दर्शन आधारित है। यहाँ Cogito का अर्थ है - मैं सोचता हूँ। ergo का अर्थ है - इसलिए। sum का अर्थ है - मैं हूँ। अतः इस सिद्धान्त के आधार पर देकार्त ने यह बतलाया कि चूँकि मैं सोचता हूँ इसलिए मेरा अस्तित्व है। फिर Cogito का अर्थ लगाया गया है - सोचना या विचारना। अर्थात संवेगात्मक तथा इच्छात्मक प्रक्रिया से भी चिन्तनशील पदार्थ का अस्तित्व सिद्ध होता है। अतः देकार्त के कहने का अर्थ चेतनमय प्रक्रिया से है और इसीलिए व्यापक अर्थ में Cogito - ergo - sum से बोध होता है कि चेतन प्रक्रिया से चेतनामय "मैं" का अस्तित्व अवियोज्य रीति से जुड़ा हुआ है।

(2)

देकार्त की धारणा थी कि स्थाई आत्मा का अनुभव हो सकता है इसलिए वे सोचते थे कि विचार या अपनी चेतना या आत्म-निरीक्षण से अपनी स्थाई आत्मा को हम जान सकते हैं और हम ज्ञान को स्पष्ट एवं परिस्पष्ट समझ सकते हैं। अनुभववादी लॉक भी समझते थे कि अहम् का प्रदर्शनात्मक या निश्चयात्मक ज्ञान संभव है। देकार्त का कहना है कि सभी बातें जो Cogito - ergo - Sum के समान स्पष्ट और परिस्पष्ट हों उन्हें भी सत्यता की कसौटी के आधार पर हम फिर से जानने की कोशिश करें कि हमारा किस प्रकार का ज्ञान सत्य माना जा सकता है।

इस सिद्धांत की आलोचना करते हुए आलोचकों का कहना है कि मेरे विचार और मेरे अस्तित्व के बीच अवियोज्य संबंध नहीं दिखता है क्योंकि मात्र प्रत्यय से हम किसी वास्तविकता को नहीं प्राप्त कर सकते हैं। विचार की प्रक्रिया से केवल यही स्थापित हो सकता है कि विचारना एक चेतन प्रक्रिया है इसलिए Cogito-ergo-Sum को निर्विवाद तथा असंदिग्ध प्राथमिक सत्यता नहीं माना जायेगा।